सुमित्रानंदन पंत

'प्रकृति के सुकुमार कवि' सुमित्रानंदन पंत का जन्म बागेश्वर ज़िले के कौसानी अलमोड़ा में 20 मई 1900 को हुआ। जन्म के कुछ ही घंटों बाद उनकी माता की मृत्यु हो गई और उनका लालन-पालन उनकी दादी ने किया। बचपन में उनका नाम गोसाईं दत्त रखा गया था। पंत ने बचपन से ही कविता लिखना शुरू कर दिया था। सात साल की उम्र में स्कूल में काव्य पाठ के लिए पुरस्कृत हुए। पंत जी की आरंभिक कविताओं में प्रकृति प्रेम और रहस्यवाद झलकता है। पंत जी हिंदी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। सुमित्रानंदन पंत नये युग के प्रवर्तक के रूप में आधुनिक हिन्दी साहित्य में उदित हुए। सुमित्रानंदन पंत ऐसे साहित्यकारों में गिने जाते हैं, जिनका प्रकृति चित्रण समकालीन कवियों में बेहतरीन था। उनकी प्रकृति पर लिखी कविता ऐसे ही रोमांच और प्रकृति के सौंदर्य को अपनी आँखों निरखने की अनुभूति देती है। यही नहीं, सुमित्रानंदन पंत की अधिकांश प्रकृति की कविताएँ पढ़ते हुए यही अनुभूति होती है कि मानो हमारे आसपास की सभी दीवारें कहीं विलीन हो गई हों। हम किसी ऐसे रम्य स्थल पर आ पहुँचे हों जहाँ पहाड़ों की अपार श्रृंखला है, आसपास झरने बह रहे हैं और सब कुछ भूलकर हम उसी में लीन रहना चाहते हैं।

हिंदी साहित्य के विलियम वर्ड्सवर्थ कहे जाने वाले इस कवि ने महानायक अमिताभ बच्चन को 'अमिताभ' नाम दिया था।

सुमित्रानंदन पंत के नाम पर कौसानी में उनके पुराने घर को, जिसमें वह बचपन में रहा करते थे, 'सुमित्रानंदन पंत वीथिका' के नाम से एक संग्रहालय के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है, जहाँ उनकी व्यक्तिगत वस्तुएँ रखी गई हैं।

सुमित्रानंदन पंत हिंदी साहित्य के एक बहुआयामी कवि थे, जो प्रकृति प्रेमी, सामाजिक चिंतक और आध्यात्मिक अन्वेषक के रूप में उभरे। उनके रचनात्मक परिवर्तनों में हिंदी कविता की सामाजिक-चेतना की कहानी भी झलकती है। महाप्राण निराला ने भी कहा था पंत जी में सबसे जबरदस्त कौशल जो है, वह है 'शेली' (Shelley) की तरह अपने विषय को अनेक उपमाओं से सँवारकर मधुर से मधुर और कोमल से कोमल कर देना। पंत जी को कला और बूढ़ा चाँद कविता संग्रह पर 1960 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार, 1969 में चिदंबरा संग्रह पर ज्ञानपीठ पुरस्कार सहित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उनका निधन 28 दिसंबर 1977 को हुआ।